>

Title: Regarding International Women's Day.

MADAM SPEAKER: Now, we will take up 'Zero Hour'.

...(*Interruptions*)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Madam, today is International Women's Day. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आज अन्तर्राÂष्ट्रीय महिला दिवास है। आप कृपया बैठ जाइए। श्रीमती सुÂष्मा स्वराज बोलने के लिए खड़ी हुई हैं। कृपया उन्हें बोलने दीजिए। वे अन्तर्राÂष्ट्रीय महिला दिवस पर बोलना चाहती हैं।

श्रीमती सुष्मा स्वराज (विदिशा): अध्यक्षा जी, आज प्रश्न-काल के आरम्भ में ही आपने सदन को अन्तर्राÂष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी थी और सभी सांसदों ने मेजें थप-थपा कर उस बधाई में आपका साथ दिया था।

अध्यक्षा जी, हम भारत के लोग, अन्तर्राÂष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर सारे विश्व को माथा ऊंचा कर के बताते हैं कि हमारे देश में चार बड़े शक्तिशाली पदों पर महिलाएं आसीन हैं। भारत की राष्ट्रपति महिला हैं, भारत की लोक सभा की स्पीकर महिला हैं, सत्तारूढ़ गठबंधन की अध्यक्षा महिला हैं और लोक सभा में नेता प्रतिपक्ष महिला हैं।

SHRI K. BAPIRAJU (NARSAPURAM): You are also there as our Leader of the Opposition. ...(*Interruptions*)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्षा जी, लेकिन जब अगला प्रश्न हम से पूछा जाता है कि आपकी संसद में कितने प्रतिशत महिलाएं हैं, तो हमें बहुत संकोच के साथ कहना पड़ता है कि लगभग 10 प्रतिशत। यह असंतुलन हमें कÂष्ट पहुंचाता है। मैं आपसे कहना चाहती हूं कि जब तक आरक्षण की व्यवस्था नहीं होगी, तब तक यह असंतुलन समाप्त भी नहीं होगा, क्योंकि संविधान के 73वें और 74वें संशोधन ने यह साबित कर दिया है कि महिलाओं को अगर प्रतिनिधित्व मिलेगा, तो केवल आरक्षण के बल पर मिलेगा।

महोदया, इन दोनों संशोधनों ने, ग्राम इकाइयों, यानी सरपंच, पंच, जिला परिषद् की अध्यक्षाओं, नगर पालिका और नगर निगम और मेयरों के पदों पर 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की थी। मुझे आज यह कहते हुए गर्व है कि अनेक भा.ज.पा. शासित राज्यों और एक एन.डी.ए. शासित राज्य बिहार ने उस आरक्षण को बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया है।

महोदया, आज देश में लाखों-लाख महिलाएं चुनकर आ रही हैं, क्योंकि आरक्षण के माध्यम से प्रतिनिधित्व बढ़ा दिया गया है, परन्तु संसद और विधान सभाओं में वह आरक्षण नहीं पहुंचा, इसीलिए हमारी संख्या 10 प्रतिशत पर स्थिर है। पिछले 60 सालों में चुनाव-दर-चुनाव होते जा रहे हैं, लेकिन यह आंकड़ा बढ़ने का नाम नहीं ले रहा है। इसलिए मैं आज कोई औपचारिक भाषण न करते हुए अन्तर्राÂष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर सभी दलों के नेताओं से अपील करना चाहती हूं कि हम महिलाओं के आरक्षण के विषय पर एक सहमति बनाएं क्योंकि यह विषय विगत 16 वर्षों से लम्बित है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि आप इसमें पहल करें।

मैं आपकी बात ही कह रही हूं। आप इसमें पहल करें और यह मीटिंग सरकार के स्तर पर नहीं, आपके स्तर पर बुलाई जाये। यह मीटिंग 2-4 घंटे की नहीं होनी चाहिए, यह मीटिंग तसल्ली वाली होनी चाहिए। यह मीटिंग रस्मी नहीं होनी चाहिए कि अपनी-अपनी बात कहकर बाद में कुछ न निकले। आप सुबह बिठाइये, आप शाम को बिठाइये, आप दो दिन बिठाइये, आप तीन दिन बिठाइये, लेकिन जब तक कोई हल न निकले, तब तक वह मीटिंग समाप्त न हो। अभी के ये पांचों चुनाव समाप्त हो जाएंगे तो हम लोग फुरसत में होंगे। पांच राज्य सरकारें बन जाएंगी।

मेरा आज के दिन आपसे यह निवेदन है कि आप भी फुरसत में 3-4 दिन खाली रखकर सब नेताओं को बुलाइये, उनकी बात सुनिये, उनके तर्क सुनिये, जानिये कि वे क्या कहना चाहते हैं। जैसा मैंने उस दिन भी कहा कि हम मिल बैठकर रास्ता निकाल सकते हैं। क्यूं 16 वर्ष से यह चीज़ लम्बित पड़ी है और हम रास्ता नहीं निकाल पाये? अगर हम एक इच्छाशक्ति लेकर बैठेंगे तो इकट्ठे बैठकर दो दिन, तीन दिन, चार दिन में यह मामला सुलटा लेंगे, लेकिन हर हालत में आरक्षण का मसला हम हल करके उठें, यह बात अगर आज के दिन हम तय कर लें तो मुझे लगता है कि अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की आज की बहुत बड़ी सार्थकता होगी। ..(<u>व्यवधान</u>)

अध्यक्ष महोदया : डॉ. राजन सुशान्त, श्री अर्जुन राम मेघवाल, श्रीमती परमजीत कौर गुलशन, डॉ. किरीट पी. सोलंकी, डॉ. प्रभा किशोर तावियाड, श्रीमती जयश्रीबेन पटेल, श्रीमती दर्शना जरदोश, श्रीमती प्रिया दत्त, श्रीमती अन्नू टण्डन, कुमारी मीनाक्षी नटराजन, डॉ. ज्योति मिर्धा व श्रीमती बोचा झांसी लक्ष्मी अपने आपको श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ सम्बद्ध करती हैं।

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): In response to what the Leader of Opposition has said, I would like to say that I entirely agree with her, and in this area there is convergence of views. But somehow or the other, we have not been able to get the Bill, which was passed through our joint efforts in Rajya Sabha, passed in Lok Sabha. Therefore, Madam, it will be highly appreciated if some initiative is also taken by you. We can thrash out this together and

try to find a way out. After all, sometimes, it appears to me that the positions are irreconcilable, but through dialogue we have been able to demonstrate that yes we can we find out a way through which we can resolve the irreconcilable positions.

On this International Women's Day, let us commit ourselves that we will find a way out so that the Bill can be passed in this House also. Through this way, we can fulfill our commitment which we have made many years ago. Thank you.

...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): लेकिन इसमें जोर-जबरदस्ती की बात न की जाये।...(व्यवधान)

डॉ. गिरिजा व्यास (चित्तौड़गढ़): अध्यक्ष महोदया, मैं नेता प्रतिपक्ष और नेता सदन की बात से अपनी बात को जोड़ते हुए सबसे पहले तो इस देश के प्रजातंत्र को, हमारी संसदीय प्रथा को और हमारे संविधान को बधाई देना चाहती हूं कि जिससे देश में सर्वोच्च स्तर पर हमारी राष्ट्रपति महिला हैं, स्पीकर महिला हैं, यू.पी.ए. की चेयरपर्सन महिला हैं और अपोजीशन की लीडर महिला हैं। देश के चारों शीर्ष स्थानों पर जब महिला बैठी हों और तब आठ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यदि हम लोगों को फिर भी अपील करनी पड़े तो मैं सोचती हैं कि इससे ज्यादा हम लोगों के लिए दुख की बात कोई नहीं होगी।

महोदया, मैं अधिक लम्बी बात तो नहीं करना चाहती, लेकिन हमारी चार भुजाओं से हमें संवैधानिक अधिकार मिले हैं। हमें इंडियन पीनल कोड के जरिये संरक्षण मिला है। हमें जो स्पेशल लॉज़ होते हैं, जो पार्लियामेंट में समय-समय पर पास होते हैं और जो हम लोग पास करते हैं, उनका पृश्रय हम लोगों को मिला है। उसके अतिरिक्त सर्वोच्च न्यायालय के जजमेंट, जो कानून का रूप धारण कर लेते हैं, वह हमें है। लेकिन उसके बावजूद भी जो आज प्रश्नकाल के बीच में, भीतर जो प्रश्न उठाये गये, वे उबलते हुए प्रश्न, बाहर हमारी जो महिलाएं एन.जी.ओ. से जुड़ी हुई हैं, जो विभिन्न पोलिटिकल पार्टीज़ से जुड़ी हुई हैं, आज बाहर अपनी बात का इजहार उसी बात को लेकर कर रही हैं और उसी बात को लेकर हम लोग सदन में आपसे यह निवेदन करने के लिए आये हैं कि जब गांधी जी ने 1922 में कहा था कि आजादी का अर्थ निरर्थक होगा, यदि हम एक ही पंक्ति में खड़े हुए व्यक्तियों को एक जैसा अधिकार नहीं दे देते।

हमें मौलिक अधिकार तो मिले, लेकिन राजीव जी ने फिर आकर पीछे देखा और उन्होंने देखा कि गांधी जी की बात तो पूरी नहीं हुई है। आज हम और सुषमा जी यहां पर बैठे हैं। मैडम, आपके माध्यम से हम कहना चाहते हैं कि शायद तीसरी बात हम पीछे मुड़कर फिर देखें कि हमें तो वे अधिकार मिले ही नहीं हैं। हम तो 10 और 11 प्रतिशत से आगे कहीं पहुंचे ही नहीं हैं और ऐसी स्थिति में आज जब बलात्कार पर चर्चा होती है, आज जब एब्डक्शन पर चर्चा होती है, आज जब सैक्सुअल एसाल्ट पर चर्चा होती है, आज हम बच्ची को जन्म नहीं दे पाते, आज ट्रैफिकिंग की चर्चा प्रश्नकाल के दौरान हुई तो इन सब चर्चाओं के आधार पर जब तक हम लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी नहीं बढ़ाएंगे, तब तक यह नहीं हो सकेगा।

इसलिए आपको पहल करनी पड़ेगी। हम विश्वास के साथ कहते हैं कि महिलाएं किसी से कम नहीं हैं। हम आप लोगों के साथ हैं और आप निश्चिंत रहें, हम लोग आपके सिर पर बैठकर नहीं बोलेंगे। ...(व्यवधान) हम लोग सिर्फ आपका साथ चाहते हैं। आपके साथ कदम-दर-कदम मिलाकर विकास की गति को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं। हम पर विश्वास रखिए। आप लोग विश्वास रखते हुए इस बात को रखें। एक बात जरूर विशेषता के साथ है, जो मैं अध्यक्ष महोदया से कहना चाहती हूं कि एक विशेषता इस राजनीति में आती, इस प्रजातंत्र में एक नया मीठा घोल देगी और वह है महिला के पास होने वाला संवेदना का पंख, जो गति का पंख है, जो संगीत का पंख है, जो सहिष्णुता का पंख है, इसलिए उस पंख को आने दीजिए, रोकिए मत। वह अभी केवल बयार के रूप में आना चाहता है। झंझावात के रूप में आने की यदि उसने कोशिश की, तो मुश्किलें बढ़ेंगी। महोदया, इसलिए मैं यहां आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि आप पहल करें। जैसा नेता प्रतिपक्ष और नेता सदन ने कहा और निश्चित तौर पर मुझे पूरा विश्वास है कि जब हमारा 73वां और 74वां बिल पास हुआ, हम दोनों सदनों में छः प्रतिशत थे, लेकिन सभी की मदद से वह बिल पास हुआ था। आज फिर समन्वय की दृष्टि से हम बिल को पास करेंगे और आगे विकास की कड़ी में बढ़ते हुए, फिर हमारे प्रजातंत्र, हमारे संविधान और देश के गौरव को आगे बढ़ाने में हम पुरूषों के साथ कदम बढ़ाकर एक नयी दिशा देंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि इस अपील का स्वीकार किया जाएगा। आज पूरा विश्व भारत की तरफ देख रहा है। उस विश्व को एक नयी दिशा देने के लिए जरूरी है कि हम इस बात का फैसला करें। आपने आज विषय को उठाने का मौका दिया, उसके लिए मैं धन्यवाद देती हूं। लेकिन दर्द तब होंगे, जब हम निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी और 33 प्रतिशत की प्रक्रिया में आरक्षण भी यहां से प्राप्त करेंगे, उसके अतिरिक्त कोई चारा हमें दिखाई नहीं देता है। जब राज्य सभा में बिल पास हो चुका है, तो इस सदन में पास न होने की क्या वजह है कि इस सदन में पास नहीं हो पाता ...(व्यवधान) महोदया, महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों पर प्रश्न करने के लिए तो आगे आ जाते हैं, लेकिन अत्याचारों को रोकने का जो अवरोधक हम लगाना चाहते हैं, उस पर आगे क्यों नहीं आते हैं? इस प्रश्न के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करती हूं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : डॉ. संजीव गणेश नाईक, श्रीमती प्रिया दत्त, श्रीमती अन्नू टण्डन, कुमारी मीनाक्षी नटराजन, डॉ. ज्योति मिर्धा, डॉ. प्रभा किशोर ताविआड और श्रीमती बोचा झांसी लक्ष्मी अपने आपको डॉ. गिरिजा व्यास के साथ सम्बद्ध करते हैं।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): माननीय नेता जी भी कुछ बोलना चाहते हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए। उनका नाम है, सभी का नाम है।

â€¦(व्यवधान)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Madam, the Bill to provide 33 per cent reservation to women was introduced in 1996 when Shri Deve Gowda was the Prime Minister. Subsequently that Bill was referred to the Joint Select Committee and the Joint Select Committee also presented a unanimous report recommending to provide 33 per cent reservation to women. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : अभी बैठ जाइए। राजाराम पाल जी, बैठ जाइए। आपको बाद में बुलायेंगे। अभी कुछ और विषय चल रहा है।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए। इनकी बात सुन लेने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : हमने इनको बुलाया है। आपकी बात रिकार्ड में नहीं जा रही है, आपको बाद में बुलायेंगे।

*(Interruptions) â€¦**

अध्यक्ष महोदया : आपको बाद में बुलायेंगे, बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Madam, since 1996 we have been waiting and waiting to provide 33 per cent reservation to the women in Parliament and legislative assemblies. By amending the Constitution, 33 per cent reservation has been provided in Panchayats. In two, three States, in West Bengal recently legislation has been enacted to provide 50 per cent reservation to women in Panchayats and local bodies. We have been trying and we have been demanding. Today is the International Women's Day and at the beginning of the sitting today you referred to that. Rajya Sabha has already passed the Bill one year before.

Why has this Bill not brought before this House? It is because unless we provide political empowerment to women of our country, unless 33 per cent reservation is provided to women, the problem today we are facing in regard to women cannot be tackled. Most of the problems can be addressed by giving political empowerment to women. So, there is a need for enactment of a legislation; there is a need for amending our Constitution to provide 33 per cent reservation. I am not averse to any discussion or negotiation. We had in the past series of meetings. A number of meetings had taken place but there had not been any unanimity. If further negotiation is required, that can be done. But this should not be delayed. Passage of the Bill should not be delayed. This Bill should be brought before this House and it should be passed without further delay.

MADAM SPEAKER: Dr. Ram Chandra Dome, Shri Khagen Das, Sk. Saidul Haque are associating with the issue raised by Shri Basu Deb Acharia.

DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR (BARASAT): Thank you, hon. Madam, for giving me this opportunity today to stand here and through you, hon. Madam to wish all the lady Members present here in this House and outside the precincts of this hon. House, a very happy International Women's Day. But is it relevant to wish the ladies inside and outside this hon. House only on one day, the 8th March, every year and forget their difficulties, their requirements, their honour, throughout the 364 days of the year? Though essential only political reservation and political discussions will not help them. I quote the revolutionary poet, Kazi Nazrul Islam:

`biswe ja kichu mohan sristi chiro kalyankar,

ardhek tar koriyache nari, ardhek tar nar.'

Whatever is beautiful and great in the Universe has not only been created by men, women were an integral part of it. Why do not we realize it? We are talking about women in the world only on one day, the 8th March. We do talk about Clara Jetkins fighting for equal wages; we do talk about of Emylin Pankhurst Francais, who continued hunger strike outside the British Parliament in 1921 and gave the British women a right to franchise. But we do not really remember those women, the fisherwomen in coastal States of India - Goa, Maharashtra, Tamil Nadu, Andhra Pradesh, who are working throughout day and night in the burning heat, drying fish, to feed their families. We do not think of those women in the States of West Bengal, Assam, Bihar working in the paddy fields trying to feed their families. We are not always thinking of those women in the hills of India, who are gathering firewood to run the hearth and those in deserts walking miles to gather drinking

water. We have to think about them every day because 70 per cent of women in this country are anemic. Why do we not let our women live and love? By live, I mean, even before the women are born, they are killed in India; they are not allowed to see the light of the day. The sex ratio in India is changing because as little embryos, as little fetuses; they are being killed. The parents do not want the women. Why?

About love, I said, we have to let them live and love. The honour killing, a heinous crime, is being taken up by families so that the honour of the family is saved. An adult women, when she falls in love, has every right to do so. So, we have to take serious steps as far as this heinous crime is concerned. Reservation, politically, is definitely wanted but we have to think of all these women every day.

As far as women trafficking is concerned, I can talk of my State, West Bengal, 50 to 60 women are sent outside the borders through Bongaon, Mushirabad and we cannot find them. I approached the National Women's Commission 10 years back, 15 years back. They say that their hands are tied. So, I request Madam, through you, the whole House that we must stop early marriage and early child birth; we must look up for their empowerment, especially for the *dalit* and other backward classes and the minority women; we must look out for their right to education, till the last girl in the last village of the last State is empowered. Thank you.

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): अध्यक्ष महोदया, मैं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी महिलाओं को शुभकामनाएं देता हूं। जहां तक आरक्षण का सवाल है, हम उसके विरोधी नहीं हैं, लेकिन जो वर्तमान बिल आया है, मैं उससे कतई सहमत नहीं हूं। इस संबंध में कई बार चर्चाएं हुई हैं। माननीय अटल जी जब प्रधान मंत्री थे, तब लम्बी बहस के बाद सबसे बेहतर रास्ता निकाला गया था। आडवाणी साहब को पता है, नेता, विरोधी पक्ष को भी पता है। अभी आरक्षण के बारे में जो विधेयक है, उससे सारे पुरुषों को इस सदन से हटाना है। तीन साल बाद 90 फीसदी महिलाएं होंगी और 10 फीसदी पुरुष होंगे।...(व्यवधान) आप वर्तमान विधेयक के अनुसार देख लीजिए। हमारा कहना है कि पार्टी में आरक्षण कर दिया जाए। पहले पार्टी के आरक्षण पर थोड़ा सा मतभेद था। हमने 15 फीसदी रखा था। यहां आडवाणी साहब बैठे हुए हैं। उस समय माननीय अटल जी ने कहा था कि कुछ और बढ़ाइए। मैं 20 फीसदी पर सहमत हो गया था। आडवाणी साहब को पता है कि माननीय अटल जी भी 20 फीसदी पर सहमत हो गए थे कि पार्टी का आरक्षण किया जाए। उन्होंने कहा कि अगर आप 15 फीसदी करेंगे तो मैं सहमत नहीं हूं। अगर आप इसे थोड़ा बढ़ाएंगे तो मैं इस बात से सहमत हो सकता हूं कि पार्टी में आरक्षण करना ही अच्छा होगा। लेकिन वर्तमान विधेयक ऐसा है जिसमें 90 फीसदी महिलाएं हो जाएंगी। हो सकता है कि धीरे-धीरे एक भी पुरुष यहां पर न रहे।...(व्यवधान) आप इसका अध्ययन कीजिए और गंभीरता से देखिए। आप महिला सभा बनाना चाहते हैं या लोक सभा बनाना चाहते हैं, इसका फैसला करना है। ...(व्यवधान) हम पार्टी में आरक्षण तो 15 फीसदी करना चाहते थे...(व्यवधान) आप बैठिए। हम सभी की बात कर रहे हैं।...(व्यवधान) हमसे ज्यादा आपका हमदर्द कौन है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : मुलायम सिंह जी, आप इधर मुखातिब होकर बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : अध्यक्ष महोदया, हम आपसे अनुरोध करते हैं, क्या आप आरक्षण से स्पीकर की सीट पर हैं, राष्ट्रपति आरक्षण से हैं, नेता, विरोधी पक्ष आरक्षण से हैं, सोनिया जी आरक्षण से देश की नेता हैं? बिना आरक्षण के सारे पद पा लिए। हम आरक्षण के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन पार्टी में 15 फीसदी आरक्षण किया जाए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है। धन्यवाद।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : जनरल सीट भरने का आपको पूरा अधिकार होगा।...(व्यवधान) आपको लड़ने का पूरा अधिकार रहेगा। 15 फीसदी आरक्षण हो जाएगा। मैं इस बात से नहीं हटूंगा, क्योंकि अटल जी, आडवाणी साहब के सामने हम 20 फीसदी आरक्षण पर सहमत हो गए थे और वे भी सहमत हो गए थे। 20 फीसदी पार्टी में आरक्षण कर दिया जाए, यह सबसे बेहतर तरीका है। अगर यह वर्तमान बिल पास हो जाए तो हमसे कह दीजिए कि आप लोग जाइए, यहां महिलाएं आएंगी, वही लोक सभा बनेगी। यह ठीक नहीं है। मैं तैयार हूं कि 20 फीसदी पार्टी में आरक्षण किया जाए।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): अध्यक्ष महोदया, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएं देता हूं। यह पक्का है कि अगर मां मजबूत हो तो देश मजबूत है, परिवार मजबूत है। लेकिन यह कहावत कहावत तक ही सीमित है। यदि हमने महिलाओं को गुलाम न किया होता तो इस देश का सर्वनाश ही नहीं होता। इस देश की महिलाओं के चरित्र को गिराने का काम, आदमी और इंसान के बीच सहज है, सबके बीच संबंध होते हैं, उससे नापा जाता है।

द्रौपदी से ज्यादा तेजस्वी हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया में कोई महिला नहीं है, लेकिन नारी का प्रतीक सीता को माना जाता है क्योंकि वह सिर्फ पति के लिए लॉयल है, सावित्री है। आज हिन्दुस्तान का कास्ट सिस्टम यदि चल रहा है, तो महिला की गुलामी के चलते चल रहा है। जिस दिन महिला आजाद हो गयी अपने साथी को चुनने के लिए, उस दिन इस देश में क्रांति हो जाएगी। आरक्षण की बात करके देश में कुछ नहीं होने वाला है। अभी जो आरक्षण हो चुका है, उसका सर्वनाश कर दिया है उन लोगों ने जिनके हाथ में सरकार है। कौन इसके खिलाफ है? यहां 50 फीसदी आरक्षण की बात कह रहे हैं, जरा सर्वे कराकर देखिए, जो 50 फीसदी रिजर्वेशन किया है, वह कोटे के अंदर कोटा किया है, इसी सदन ने किया है, सारे समाज को मिलाकर किया है। कौन उसके खिलाफ है? मुलायम सिंह यादव जी कह रहे थे कि पुरुष बचेगा ही नहीं, मैं तैयार हूं इनके विपरीत बात कहने के लिए। 100 फीसदी महिला आरक्षण कर दो, लेकिन हिन्दुस्तान की हकीकत को छोड़कर, हिन्दुस्तान का जो सामाजिक ढांचा है, उसको छोड़कर, ये मुट्ठी भर लोग या वे महिलाएं जो दिल्ली, लखनऊ जैसे शहरों में आ गयी हैं, वे ही घूम रही हैं।

...(व्यवधान) उनको मिनिस्टर बनना चाहिए था, वह काबिल महिला हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आपकी बात आ गयी है, अब समाप्त कीजिए।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): मेरा निवेदन है कि इस पर चर्चा चली हुई है। सुषमा जी ने ठीक कहा कि कोई सहमति का रास्ता बन रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि इसे जरूर कीजिए, लेकिन हिन्दुस्तान की जो 70-80 फीसदी आबादी है, उनकी महिलाओं को इसकी पहले जरूरत है। उनके लिए आप इसमें पहले इंतजाम कर दीजिए, उसके बाद जो चाहें, कीजिए। हम लोगों को जबर्दस्ती गाली मत दीजिए। हम उसके हक में हैं, लेकिन इस देश में हजारों साल से जो एक क्रीमी लेयर है, उसी भर के लिए यदि करना चाहता हैं, तो संग्राम होगा, यह बात नहीं चलेगी।

SHRIMATI SUPRIYA SULE (BARAMATI): Madam, thank you very much for giving me an opportunity to participate in this discussion. I thank you and congratulate all the women of this country and the world. I think we have to take Women's Day beyond 8th of March and celebrate it 365 days.

I would like to agree and associate with what Sushma Swaraj ji and Girija ji have said because Maharashtra was the first State in this country which in 1993 for the first time got women's reservation in the Zila Parishad and the Panchayat Raj. There was a lot of criticism at that time. We paid a heavy price of even losing an election that year but I think eventually everybody realized that women need reservation. It is not people like me, Priya or Girija ji or Sushma ji needs it but it is the women at the bottom of the pyramid who need reservation. So, I think that is what the reservation mean. It is not for people like us or Ambika ji who have been born in fortunate families, have got good quality education and have the opportunity of coming here and representing the women.

So, I think the Women's (Reservation) Bil is critical for the bottom of the pyramid and 33 per cent insistence, that we are all doing, is purely because if you count the population of the women in this country, it is almost 50 per cent if you see the census. So, I think it is the rightfulness of the women to come here, stand and represent women. We are in the 21st century and in most of our States we are still talking about female foeticide. I come from one of the most developed States, which is Maharashtra but today there are districts like Sangli, Satara, Raigad and Pune which are struggling between the disparity between a girl child and a male child. I think the only way is to bring women to stand on their own feet.

The difference in developing States and developed nations is that all the developed nations have moved towards gender equality and I think reservation is one step forward to take the women of this nation towards gender equality.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): Hon. Madam Speaker, thank you very much. I did not realise that this discussion will wear on reservation as an issue. Women's Day that I as a man has been observing as a Day especially designated to give respect and regards to our mothers, sisters, wives, daughters and all those who are associated with us.

But as political animals we are eventually weird to things that are hardly of any consequence to those young and old women who are living in the tribal areas of Orissa or Jharkhand or Tamil Nadu or any other place in India. Are we really interested to create a society that treats women as equals and that treats our mothers with respect? Do we realise that in the beginning of the second decade of the 21st century, we are actually a society that respects women? I am afraid to say that let us not turn everything into politics of Assembly and the Parliament. The country is not really limited to the few people sitting here in this House or upon the wisdom that we have for the past so many years. For more than half a century, we have already shown our wisdom and all of us are aware what kind of regard and respect people of this country have for us. We are probably the real down-trodden who are representing the people in this House. So, I would say that India not only in the past where there was Sita or Draupadi or Lakshmi or Kali, it is India today where you, Madam, represent the country and you are a pride to the democratic mind set of the Indian people. It is not the numbers that matter. I respect Mulayamji and what he said has to be heard with attention. It is not the numbers. Why are we talking of 15 per cent or 20 per cent or 33 per cent? Who are we? Is it men who will decide what percentage we will give? Is it that women need *daya* and need the condescending attitude of men to survive in this country? Or is it that they have a right? Is it that they have the ability to stand up? I come from a family where my mother was actually our parent. She was the one who guided the family and she single-handedly at a time when there were few women could shine in Indian politics and the State politics. So politics is a line that you, Madam, Sushmaji, Soniaji and one of the greatest women in Indian political history, Shrimati Indira Gandhi have shown that the capability and strength, grit and determination are the ingredients that Indian women bear within themselves. But we, the men, and we as a society where women are also included are incapable of recognising this fact.

Today, on Women's Day I do not congratulate only the women of India but I congratulate the men of this country

also and request them to please open their eyes and ears, respect their own mothers and sisters, do not kill their daughters, do not do anything that will harm the *maatrushakti* of this country. This is the only country which has respected the *maatrushakti* and this is the only country that will forge ahead to face the future with strength because its women will have to be educated, will have to be given economic independence. It is not that a few women sitting as MPs or MLAs will emancipate women-kind in India. It is economic independence, it is education and it is the self-confidence that we have to build in them not by men but by leaders like you, leaders like Sushmaji instead of depending and asking for reservation, let us ask for equality and let us ask for respect.

श्री आनंदराव अडसुल (अमरावती): अध्यक्ष महोदया जी, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं और देश की सभी महिलाओं को शुभकामनाएं देता हूं। महिला रिजर्वेशन के बारे में हमारे सुप्रीमों बाला साहेब ठाकरे जी ने पहले से समर्थन किया है। हमारा कहना केवल इतना ही है कि जो भी कोटा तय करेंगे, जो भी परसेंटेज तय करेंगे, वह हमारी पार्टी द्वारा तय होगा। इतना अधिकार अगर पार्टी को दे देंगे तो हमारा समर्थन शुरु में था, आज है और कल भी रहेगा। मैं इसकी जरुरत भी मानता हूं। अगर 50 फीसदी महिलाएं हमारे देश में हैं, तो उन्हें बराबर का अधिकार मिलना चाहिए। घर संभालना, खेती में काम करना, कार्यालय में काम करना, अगर यह सब काम महिलाएं करती हैं, तो उन्हें यहां अधिकार क्यों नहीं, यह भी हम मानते हैं। इसलिए जो भी परसेंट आप तय करेंगी, उसके साथ शिवसेना है। पार्टियों को कोटा तय करने का अधिकार दिया जाए, इतना कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने समय दिया, आपका धन्यवाद।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नर-नारी समता के लिए हम सबको मिल-जुलकर संकल्प करना चाहिए, उसके लिए वातावरण बनाना चाहिए। हमारे यहां जन्म से लेकर मृत्यु तक महिला के शोषण की परिपाटी है, लेकिन जहां-तहां महापुरुषों के प्रयासों से वातावरण में सुधार हुआ है। जब तक नर-नारी में समता नहीं होगी, तब तक देश और दुनिया में सही समाज की स्थापना नहीं हो सकती है।

ऐसा सुनते हैं कि आरक्षण से सब सही हो जाएगा लेकिन यह हमें जंचता नहीं है। लोगों के मन में आशंका हो जाती है क्योंकि महिलाओं का तो बिना आरक्षण के ही बड़े से बड़ा पद हो गया है। नेता विपक्ष ने संख्या कम है, इस पर चिंता जाहिर की है। आरक्षण का मूल सिद्धांत है कि जहां महिलाएं वंचित हैं वहां विशेष अवसर देकर उन्हें मौका दिया जाए। हमें डर है कि वंचित महिला के नाम पर कहीं हिस्सेमारी न हो जाए। इसलिए लोग सजग हैं और इसमें आम सहमति बन जाए तो अच्छा है। राज्य सभा में जबर्दस्ती करके लोगों ने महिला बिल पास करवाया है और अगर यहां भी यही होगा तो बहुत भारी युद्ध की आशंका हो जाएगी। इसीलिए जो वंचित हैं उनका सर्वे हो जाए। कुछ वर्गों की महिलाएं जिनमें माइनोरिटी है, अनुसूचित जाति है, जनजाति हैं, ओबीसीज हैं, इनकी महिलाएं जीतकर नहीं आती हैं, क्या इन वर्गों की महिलाओं का हिस्सा नहीं होना चाहिए। इनका हिस्सा खोल दीजिए, नहीं तो इसमें बड़ा भारी भेद और बड़ी भारी आशंका हो जाएगी। इसमें किसी तरह का घालमेल करने से बात नहीं बनेगी, बल्कि हिस्से में हिस्सा इन वर्गों का करिये, तो बिल पास करा लीजिए, नहीं तो बड़े भारी झंझट की आशंका है। महिलाओं को पूरी शुभकामनाएं हैं, नर-नारी समता हो, उसके लिए सब कुछ करने के लिए हम तैयार हैं।

SHRI PRABODH PANDA (MIDNAPORE): We always, from our party, forcefully have demanded more political power and the reservation for the women from the beginning. I can refer in this House itself that it was under the leadership of our late Geeta Mukherjee, who happened to be a Member of this House, that this initiative of having reservation for women was taken up.

So, we are always in favour of reservation for women. But it is not understood as to why the Government is not taking initiatives in this regard.

Hence, I do support the proposal putforth by the Leader of the Opposition and from the Chair itself, Madam, you may kindly take the initiative so that all political parties may sit together and come to a consensus on this matter.

Madam, we are not talking only about reservation for women. The point is about the attitude towards women in this society. We are still following the legacy of Manuism. What is the attitude towards women? Just look at the demographic picture of our country! What is the gender equation of our country? Equality of gender, empowerment of women, placing women in their proper place and more political power for women are urgently needed.

In this respect, we forcefully demand that the Bill for Reservation of Women in its original form should be put forward in this House for discussion and then, we should pass it.

डॉ. बलीराम (लालगंज): अध्यक्ष महोदया, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर बोलने का अवसर दिया है। देश के ही नहीं, बल्कि दुनिया के समस्त नारी समाज का मैं सम्मान करता हूं। आज सदन में महिला आरक्षण पर हमारे तमाम माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। वर्ष 1953 में काका कालेलकर आयोग बना, उन्होंने रिपोर्ट में 20 प्रतिशत महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की थी। आज जो सत्ता पक्ष में हैं, उन्होंने काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में इसलिए फैंक दिया, क्योंकि इस रिपोर्ट में20 प्रतिशत महिलाओं को अलग से आरक्षण देने की व्यवस्था की गई

थी। हमारी बहुजन समाज पार्टी, महिलाओं को आरक्षण मिले, इसका पूरा समर्थन करती है। देश में अगर हम अपने वेदों पुराणों को देखें तो पता चलता है कि महिलाओं को सम्मान किस रूप में हुआ है। नारी को लोगों ने सरस्वती का अवतार कहा है। नारी को लोगों ने लक्ष्मी का अवतार कहा है। नारी को लोगों ने दुर्गा का अवतार कहा, लेकिन हमारे देश में नारी का आज क्या स्थान है? न ही इनके पास सरस्वती आ सकी, न ही इनके पास लक्ष्मी आ सकी और न ही ये कभी दुर्गा बन सकीं। अगर ये दुर्गा बनी होतीं, तो आज हमारी माताओं और बहनों का इस तरह से न कोई गला घोंटता और न ही वे जलाई जातीं।

महोदया, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि सदन उन महिलाओं के लिए भी चिंतित है जो खेत खलिहानों में काम कर रही हैं, जो सड़कों पर काम कर रही हैं। अगर महिला आरक्षण की सदन में चर्चा हो रही है कि उन्हें चुनकर आना चाहिए, तो गरीब महिला कैसे सदन में आएगी, इसकी भी हमें चिंता करनी पड़ेगी। देश का जो आज सामाजिक ढांचा है, इस सामाजिक ढांचे में व्यवस्था " स्त्री सूत्रो न अध्येताम " की रही है, बाबा साहब डॉक्टर अम्बेडकर और कई अन्य महापुरुष चाहे महात्मा ज्योति राव फुले हों, चाहे छत्रपति शिवाजी महाराज हों, ऐसी व्यवस्था को उन्होंने संघर्ष करके समाप्त किया तथा पुरुष और महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिया।

अध्यक्ष महोदया : आप अपनी बात जल्दी समाप्त कीजिए।

डॉ. बलीराम (लालगंज): हम भी यही चाहते हैं कि महिलाओं को आरक्षण मिले। हमारे देश का जो सामाजिक ढांचा है, उसमें कोई ऐसा वर्ग उपेक्षित न रह जाए, जो इस सदन में आने से वंचित रह जाए। इसलिए हम चाहते हैं कि एससी, एसटी, ओबीसी और माइनोरिटी वर्ग की महिलाओं का आरक्षण भी किया जाए। हमारी पार्टी इसका स्वागत करेगी और सम्मान करेगी। धन्यवाद।

SHRI S. SEMMALAI (SALEM): Madam Speaker, thank you for giving me this opportunity. Today is an auspicious day. We are celebrating the International Women's Day. On behalf of my Party, the AIADMK, and on behalf of my leader, *Puratchi Thalaivi* J. Jayalalithaa, we desire to associate with the views expressed by the leaders in the august House in favour of women's reservation and the upliftment of women folk.

In our Party, my leader has given 33 per cent reservation in party posts to women. In Tamil Nadu, the reservation policy is being implemented in local bodies. As a fore-runner, my leader has implemented this and has given more opportunities to women.

On behalf of my Party, I would like to assure that whenever the Women's Reservation Bill comes up for discussion and voting in the august House, our Party will support it whole-heartedly. Thank you.

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्मम): अध्यक्ष महोदया, विश्व महिला दिवस पर मैं पहले आप सबको बधाई देता हूं और साथ ही कहना चाहता हूं कि आंध्र प्रदेश में लोकल बॉडी में तेलगुदेशम पार्टी के एन.टी.रामाराव साहब पहले आरक्षण लेकर आए थे और वह न केवल राजनैतिक आरक्षण बल्कि प्रोपर्टी में ईक्वल राइट्स लेकर आए हैं। इसके बाद 1996 में जब यूनाईटेड फ्रंट गवर्नमेंट थी, देवेगौड़ा साहब के नेतृत्व में जो वूमैन रिजर्वेशन बिल को इंट्रोडयूस किया गया था, उस समय चंद्रबाबू नायडू साहब यूनाईटेड फ्रंट के कन्वीनर थे। हम लोग चाहते हैं कि यह बिल उसी समय से पास हो जाए। लेकिन यह बात अभी तक आगे नहीं बढ़ पाई है। लेकिन इसमें कुछ डाउट्स हैं। अभी विपक्ष की नेता ने जिस तरह से सुझाव दिए हैं, उसी तरह से मुलायम सिंह यादव जी ने जिस तरह से इस पर डाउट्स व्यक्त किये हैं कि कुछ दिन के बाद 90 प्रतिशत यह वूमैन का हो जाएगा। इन सब डाउट्स को क्लिअर करते हुए, मीटिंग बुलाकर इस वूमैन रिजर्वेशन बिल को जरूर लाना चाहिए। जैसा अपोजीशन लीडर ने कहा है कि चार महिला लीडर्स जो सब जगह से लेकर यानी प्रेसीडेंट से लेकर अपोजीशन दोनों तरफ बैठी हैं, इस समय यदि वूमैन रिजर्वेशन बिल पास नहीं होगा तो मैं कहूंगा कि इसकी पूरी जिम्मदारी आप लोगों पर है।...(व्यवधान) इसलिए आप लोगों को किसी तरह से इस पर डिसकशन करके वूमैन रिजर्वेशन बिल को लाना चाहिए और यह बिल पास होना चाहिए। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदया : कुछ वर्ष पूर्व मैंने नारी पर एक कविता लिखी थी। मैं उसकी पहली पंक्ति पढ़ना चाहती हूं:-

"पंख भी हैं, खुला आकाश भी है, फिर यह न उड़ पाने की मजबूरी कैसी?"

इसीलिए मुझे लगता है कि आरक्षण की आवश्यकता है। नेता विपक्ष ने, सदन के नेता ने तथा अन्य माननीय सांसदों ने जैसा सुझाव दिया है कि राज्यों के चुनाव जब हो जाएंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी कि हम सभी दलों के नेताओं को बुलाएं, जो आपस में विचार-विमर्श करें और एक आम सहमति बनाएं। मैं पूरी तरह से आशान्वित हूं कि कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: The House will now take up "Zero Hour."

Shri Purnmasi Ram.

...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : अब ज़ीरो ऑवर चलेगा। हम सबको बुलाएंगे।

â€¦(व्यवधान)

श्री पूर्णमासी राम (गोपालगंज): अध्यक्ष महोदया, भारत सरकार के हाजीपुर...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record except what Shri Purnmasi Ram is saying.

*(Interruptions) â€¦**